योजना का सार

खादी : भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक

भूमिका

- 'हरिजन' पत्रिका में गांधीजी ने खादी के संदर्भ में कहा था कि ''खादी गाँव के सौरमंडल का सूर्य है। विभिन्न उद्योग ग्रह हैं जो खादी की ऊष्मा और उससे मिलने वाली जीविका के बदले में समर्थन दे सकते हैं। इसके बिना, अन्य उद्योग विकसित नहीं हो सकते।... गाँवों को अपना खाली समय लाभप्रद रूप से व्यतीत करने में सक्षम होने के लिए, ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए।''

खादी की विशिष्टता

- खादी हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रपिता की गौरवशाली विरासत है। खादी एवं ग्रामोद्योग भारत की दो राष्ट्रीय धरोहर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में खादी और ग्रामोद्योग (KVI) का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि ये बहुत कम प्रतिव्यक्ति निवेश से रोज़गार पैदा करते हैं।
- खादी को 'भारत में सूती, ऊनी या रेशम के धागों से हथकरघे पर बुने गए और हाथ से काते गए किसी भी कपड़े या दो से अधिक धागों के संयोजन के रूप में परिभाषित किया गया है।
- हाथ से काती गई या हाथ से बुनी गई प्रक्रिया से कपास, रेशम और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों से बनी खादी में अधिक कोमलता होती है, जो इसे गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म बनाती है।
- खादी को ज़्यादातर प्राकृतिक रंगों, जैसे- इंडिगो, एलिजारिन, लाल रंग के लिए जंग लगे लोहा के साथ गुड़ के किण्वित पानी से रंगा जाता है और अनार तथा हरड़ का उपयोग करके इसे पीला रंग दिया जाता है।

- खादी का उपयोग त्वचा तथा पर्यावरण के अनुकूल, आरामदायक, वायु-पारगम्य और शून्य कार्बन उत्पाद बन जाता है।

स्वतंत्रता आंदोलन और खादी

- गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित की और खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया।
- इस आंदोलन के माध्यम से ही औपनिवेशिक शोषण की नींव पर प्रहार करने के लिए खादी को अहिंसा के हथियार के रूप में प्रयोग किया साथ ही, चरखा स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गया और खादी राष्ट्रवाद की पहचान बन गई।
- खादी आंदोलन ने ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं के सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी का एक बड़ा कारण निश्चित रूप से खादी आंदोलन था।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर खादी का उत्पादन होता है जो शहरी क्षेत्र के लोगों तक पहुँचता है।
- खादी जो कि विशुद्ध रूप से आर्थिक गतिविधि थी ,वो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक राजनीतिक हथियार बन गईं और चरखा राष्ट्रवाद का प्रतीक बन गया।

भारत के हथकरघा उत्पाद

भूमिका

- हथकरघा उत्पाद भारत की संस्कृति और सभ्यता को प्रदर्शित करते हुए आदर्श कारीगरी का जीवंत प्रमाण है, जैसे- पश्मीना (कश्मीर), फुलकारी (पंजाब), चिकनकारी (उत्तर प्रदेश), मूंगा सिल्क (असम), नागा शॉल (नगालैंड), पोचमपल्ली इकत (तेलंगाना), कांचीपुरम साड़ी (तमिलनाडु), मैसूर सिल्क (कर्नाटक), बांधनी (गुजरात), पैठणी (महाराष्ट्र) आदि।

भारत में हथकरघा उद्योग

- भारत में हथकरघा क्षेत्र कृषि के बाद 3 मिलियन से अधिक लोगों को रोज़गार प्रदान करने वाले असंगठित क्षेत्र के रूप में दूसरे स्थान पर है।
- यह लगभग 24 लाख करघों (आईबीईएफ-2024) के साथ देश का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग भी है।
- यद्यपि, भारतीय हथकरघा उत्पाद छोटे शहरों और गाँवों में उत्पादित होते हैं, लेकिन अपनी विशिष्टता, गुणवत्ता, विविधता और मज़बूती के लिए इन्हें दुनिया भर में मान्यता प्राप्त है।
- यह वैश्विक पहचान भारत के हाथ से बुने हुए विभिन्न उत्पादों के लिए बड़े निर्यात बाज़ार बनाने में मदद करती है।

हथकरघा उत्पादों का निर्यात

- भारतीय हथकरघा उत्पादों की विश्व के 20 से अधिक देशों, मुख्य रूप से विकसित देशों और मध्य पूर्व में काफी मांग है।
- इन देशों में, अमेरिका एक प्रमुख बाज़ार है और 2021-22 में अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में भारत के हथकरघा उत्पादों की निर्यात मांग के लगभग 40% हिस्से की गणना की गई है।
- भारत के हथकरघा निर्यात में प्रमुख वस्तुओं, में- चटाई और मैटिंग, कालीन, गलीचा, बेडशीट, कुशन कवर और अन्य हथकरघा वस्तुएँ शामिल हैं।
- सजावटी उत्पादों लिनन बेड, पर्दे, टेबल और किचन लिनन, कुशन कवर आदि शामिल हैं और यह भारतीय हथकरघा उत्पादों के निर्यात में 60% से अधिक का योगदान करते हैं।

वस्तुओं के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम, 1999

- भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग उस उत्पाद को प्रदान किया जाता है जो अपने विशिष्ट मूल स्थान से पहचाना जाता है।
- जीआई टैग कि

हथकरघा उत्पादों की ब्रांडिंग : 'इंडिया हैंडलूम' ट्रेड मार्क

- 'इंडिया हैंडलूम' ने हथकरघा उत्पादों ''शून्य दोष और पर्यावरण पर शून्य प्रभाव'' के साथ उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद के रूप में ब्रांडिंग प्रदान की है।
- 'इंडियन हैंडलूम' मार्क का उद्देश्य निर्यातक द्वारा समय पर उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों की खरीद सुनिश्चित करना और भारत के हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पादों के लिए एक अनूठी छवि कायम करना है।
- इसे 'ट्रेडमार्क्स अधिनियम, 1999' के तहत एक ट्रेडमार्क के रूप में भी पंजीकृत किया गया है।
- वस्तुओं के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम, 1999 और द डिज़ाइन एक्ट, 2000 के माध्यम से भारत में हथकरघा उत्पादकों को बौद्धिक संपदा (आईपी) सुरक्षा प्रदान की जाती है।

भारतीय हथकरघा के लिए संभावित वैश्विक अवसर

- मशीन-निर्मित उत्पादों के उत्पादन में महत्त्वपूर्ण तकनीकी प्रगति के बावजूद भारतीय हथकरघा उत्पादों में नए अवसर मौजूद हैं। वर्तमान समय में खरीददारों और विक्रेताओं का ज़्यादातर ध्यान टिकाऊ उत्पादों पर है।
- नई पीढ़ी स्टाइल के प्रति जागरूक है, लेकिन पर्यावरण-प्रेमी है और ऐसे उत्पादों को पसंद करती है जो स्टाइलिश हों लेकिन पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाते हों। हथकरघा उत्पाद नई पीढ़ी की इन दोनों आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
- बढ़ते ई-कॉमर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म की उपलब्धता हथकरघा उत्पादकों को छोटे शहरों और दूरदराज के स्थानों से भी अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों तक पहुँचने का अवसर प्रदान करती है।

हथकरघा उद्योग के समक्ष चुनौतियाँ

- कई अवसरों के बावजूद, हथकरघा उत्पादों को हाथ से बुनाई की परंपरा को जीवित रखने की महत्त्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ता है।
- बेहतर वेतन वाली कुशल नौकरियों की उपलब्धता में वृद्धि के साथ, पारंपरिक कारीगर अपनी नई पीढ़ी को ''अधिक श्रम और कम भुगतान वाले'' हाथ से बुनाई के पेशे में लाने के इच्छुक नहीं हैं।
- उत्पादकों को मशीन-निर्मित कपड़ों से भी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता है, जो कम श्रम लगने के कारण अक्सर सस्ते होते हैं।
- प्रतिस्पर्द्धात्मक नुकसान और अधिक गंभीर हो जाता है क्योंकि मशीन से बने उत्पाद हाथ से बुने हुए उत्पादों की प्रतिकृतियों की तरह दिखते हैं और इसलिए मशीन से बने उत्पाद तथा हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पाद के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

निष्कर्ष

- भारत के हथकरघा उत्पाद एक ही समय में परंपरा और आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन उत्पादों के अनूठे डिज़ाइन, गुणवत्ता और विविधता ने पिछले कुछ वर्षों में अन्य देशों में एक विशिष्ट बाज़ार बनाने में मदद की है। हाथ से बुने उत्पादों के कारीगरों ने नई पीढ़ियों की मांगों को पूरा करने के लिए अपने डिज़ाइन और कपड़ों के साथ प्रयोग किया है। परिणामस्वरूप, आज भारतीय हथकरघा उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय मॉडलों और मशहूर हस्तियों द्वारा समर्थन दिया जाता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत के हथकरघा उत्पाद अपनी स्थानीय विशेषताओं के साथ महत्त्वपूर्ण वैश्विक छाप छोड़ रहे हैं।

भारतीय बुनाई में क्षेत्रीय विविधता

भूमिका

- भारत में बुनाई, शताब्दियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से अपनी प्राचीन उत्पत्ति से लेकर विकास तक, परंपराओं, नवाचारों और प्रभावों की निरंतरता को दर्शाती है जो आज तक देश की अनूठी वस्त्र-परंपरा को आकार देती है। हाल के वर्षों में इन वस्त्रों के लिए वैश्विक स्तर पर सराहना ने भारत की बुनाई विरासत के महत्त्व को मज़बूत किया है।

भारत में बुनाई के स्तर पर क्षेत्रीय विविधता

तेलंगाना : पोचमपल्ली इकत

- तेलंगाना राज्य का नलगोंडा ज़िला पोचमपल्ली इकत बुनाई के लिए प्रसिद्ध है।
- इसे पारंपरिक ज्यामितिक और अमूर्त पैटर्न में बुनाई से पहले एक्सपोज हिस्से को बार-बार बंधने और रंगाई के माध्यम से धागों को अलग-अलग रंगों में परिवर्तित करके तैयार किया जाता है।
- इसमें बुनाई के लिए सूती और रेशम दोनों रेशों का प्रयोग किया जाता है।

तमिलनाडु : कांचीपुरम रेशम

- तमिलनाडु के कांचीपुरम के मंदिरों से प्रेरित होकर साड़ियों को ताने और बाने दोनों में शहतूत रेशम से उत्कृष्ट ढंग से बुना जाता है।
- एक दिशा में तनाव के साथ बांधे धागे को ताना कहते हैं और ताना के बीच से जिस धागे को बुना जाता है उसे बाना कहते हैं।
- इसमें जटिल कोरवल और पेटनी तकनीक का प्रयोग किया जाता है उत्तम कांचीपुरम साड़ियों में मोर, हाथियों से लेकर घोड़ों तक शुद्ध जरी अलंकरण और मनमोहक रूपांकन होते हैं।

राजस्थान : कोटा डोरिया

- राजस्थान का कोटा ज़िला इसका मूल स्थान है।
- यह कपडा चौकोर चेक पैटर्न में कपास और रेशम का अनूठा मिश्रण है।
- रेशम, कपड़े में चमक, जबकि कपास मज़बूती प्रदान करता है। चेक पैटर्न में की गई बुनाई को खट कहा जाता है।
- राजस्थान में फर्श कवरिंग, दरी की कताई-बुनाई के साथ-साथ प्लेन फैब्रिक की भी परंपरा रही है।

गुजरात : पाटन पटोला

- गुजरात के पाटन क्षेत्र में उत्पादित, पटोला वस्त्र एक डबल इकत साड़ी है।
- इसमें ताने और बाने को लटकते करघे पर बुनने से पहले धागों की सटीक गिनती के अनुसार बांधा और रंगा जाता है।
- पटोला रेशम अपने जीवंत रंगों, बोल्ड ज्यामितीय डिज़ाइन और विविध विशेषताओं के लिए जाना जाता है।
- गुजरात में बुनाई, कपड़ों में प्रिंटिंग और बंधनी कपड़े का व्यापक उत्पादन किया जाता है।

महाराष्ट्र : पुणेरी रेशम

- महाराष्ट्र में वर्धा के क्षेत्र में कपास और गढ़चिरौली में रेशम की खेती का व्यापक आधार मिलता है।
- महाराष्ट्र का पूर्वी क्षेत्र पुणेरी रेशम और सूती साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है वहीं पश्चिम की ओर बढ़ते हुए शुद्ध रेशम में ''करवट काठी'' का प्रयोग किया जाता है।

गोवा : कुनबी साड़ी

- गोवा आदिवासी सूती साड़ी को दुनिया भर में ''कुनबी साड़ी'' के नाम से जाना जाता है।

- ये साड़ियाँ मूल रूप से गोवा में हैंडलूम पर बनाई जाती हैं और इसका उल्लेख आदिवासी लोक गीतों में भी किया जाता है।

जम्मू कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड : पश्मीना ऊन

- जम्मू कश्मीर के साथ-साथ लद्दाख और उत्तराखंड में पश्मीना भेड़ से ऊन प्राप्त किया जाता है।
- इस मोटे से महीन ऊन से परिधानों और शालों आदि की हाथ से बुनाई की जाती है।
- पहले इनके किनारे सादे होते थे, लेकिन अब इनके बाहरी किनारे पर विभिन्न गुणवत्ता और डिज़ाइन के शानदार प्रकृति-प्रेरित फूलों वाले पैटर्न में कढ़ाई की जाने लगी है।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ : चंदेरी रेशम

- चंदेरी रेशम मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में एक व्यापक आधार प्रदान करके चंदेरी, महेश्वर और बिलासपुर जैसे प्रसिद्ध बुनाई केंद्रों का भरण-पोषण करता है।
- पूर्व से पश्चिम तक इसमें कपास की खेती, हाथ से कताई, बुनाई, छपाई और रंगाई की एक लंबी परंपरा रही है।

उत्तर प्रदेश : जरी की विरासत

- उत्तर प्रदेश में सूती साड़ी उत्पादन का एक व्यापक आधार है। सांस्कृतिक केंद्र एवं व्यापारिक केंद्र वाराणसी की बुनी हुई, कढ़ाई की गई और प्रिंटेड साड़ियाँ बेहतरीन तकनीकी और सौंदर्य संबंधी उत्कृष्टता से परिपूर्ण हैं।
- इस सांस्कृतिक राजधानी ने मुगल कारखानों की स्थापना के बाद पूरे राज्य के साथ-साथ सुदूर फारस से भी बुनाई कौशल को ग्रहण किया और तिब्बत एवं एशिया के अन्य हिस्सों के साथ भी इनका व्यापार रहा है।

बंगाल, बिहार और ओडिशा

- बंगाल, बिहार और ओडिशा का साझा अतीत रहा है लेकिन वे अलग-अलग रूप में विकसित हुए हैं।
- बिहार में घरेलू उपयोग और परिधान के लिए तसर कपड़ों के साथ-साथ तसर साड़ियों की रेंज में भी वृद्धि हुई है, विशेष रूप से भागलपुर क्षेत्र में।
- पश्चिम बंगाल ने अपनी साड़ी बुनाई में अधिक निरंतरता देखी है। ओडिशा में असाधारण गुणवत्ता वाली सूती और रेशम पैटर्न वाली साड़ियाँ प्रसिद्ध रहीं हैं।

उत्तर-पूर्वी राज्य

- सात उत्तर पूर्वी राज्य, जो सिलाई और बुनाई दोनों ही कौशल के लिए जाने जाते हैं, विभिन्न प्रकार के सूती और सफेद के कई शेड में एरी जैसी सिल्क और सुनहरे मूंगा भारत के सभी भागों में विभिन्न रंगों के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।
- असम अपने 'मेखला चादर', 'गमछा' और साड़ियों के बढ़ते उत्पादन के लिए जाना जाता है।
- अरुणाचल प्रदेश की 'गेल' और 'गलुक' भी तेज़ी से अपनी पहचान बना रही है।
- त्रिपुरा में 'एरिशा', 'पचरा', 'लिसेम्फी' जैसे स्थानीय-क्षेत्रीय परिधान और चादर बुनाई का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है।
- मिज़ोरम के स्थानीय-क्षेत्रीय परिधान जैसे 'पुआनचेई पुआन' और 'पोंडाम पुआन' आदि की पहचान तेज़ी से बढ़ रही है।
- मेघालय का 'जैन्सेम' तथा 'सिल्क स्टोल' की बुनाई की मांग बढ़ रही है।
- मणिपुर में 'इन्नाफी', 'वान्खेई फी', 'लेंगयान (गमछा) ने भी अपना प्रभाव बढ़ाया है।

- नागालैंड में पुरुषों और महिलाओं के लिए आवरण वस्त्र 'सगंतम', 'सेमा', 'निकोला' आदि अपने विशिष्ट जनजातीय समुदायों के लिए बुने जाते हैं, जिन्हें तेज़ी से पहचान मिल रही है।

हस्तशिल्प के लिए अवसर

- हस्त-कौशल क्षेत्र, वास्तव में, विकास के लिए आधार अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला है जो इसके भीतर और उत्पादन की बढ़ती मशीनीकृत प्रणालियों दोनों में हो सकता है।
- समकालीन संदर्भ में, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण की बढ़ती मजबूरी के बावजूद, पारिस्थितिक रूप से व्यवहार्य और मज़बूत विकास के बारे में जागरूकता भी बढ़ रही है।
- कुशल हाथों से कताई और बुनाई के अपने समृद्ध संसाधनों के साथ, भारत मशीनीकृत और उच्च-प्रौद्योगिकी के साथ धीमें, लेकिन उच्च-कुशल उत्पादन क्षेत्रों को संतुलित करने का रास्ता दिखाने के लिए लाभप्रद स्थिति में है।
- भले ही साड़ी रोज़मर्रा के लिए तेज़ी से लुप्त होने वाला परिधान है, फिर भी विशेष अवसरों के लिए इसका महत्त्व बना रहेगा। भारतीय महिलाएँ आज सिले हुए कपड़ों और आसानी से बनाए रखने वाले धोने और पहनने वाले पश्चिमी कपड़ों के लिए प्राथमिकता दिखा सकती हैं, फिर भी, साड़ी पहचान और औपचारिकता दोनों के प्रतीक के रूप में बनी हुई है।
- साड़ी, बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट संगठनों के बोर्डरूम, कानून कक्षों और अदालतों में और उन नए पॉवर पेशेवरों के बीच बढ़ती उपस्थिति का दावा कर रही है जो अपनी पहचान के प्रति सचेत हैं और इससे अपनी ताकत अंकित करना चाहते हैं।

भारतीय बुनाई के स्थायित्व को प्रोत्साहन

भूमिका

- भारत के पास हज़ारों वर्ष पुरानी बुनाई परंपराओं की एक समृद्ध विरासत है। देश के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट बुनाई परंपरा है, जिनमें अद्वितीय तकनीकों, रूपांकनों और सामग्रियों की विशेषता है, जिसमें बनारस के जटिल ब्रोकेड से लेकर तेलंगाना के आकर्षक इकत तक, भारतीय वस्त्रों की उनके अद्वितीय शिल्प कौशल और कलात्मक अभिव्यक्ति के विशेष रूप से जाना जाता है।

भारतीय बुनाई परंपरा का महत्त्व

- परंपरागत रूप से, भारतीय बुनकर कपास, रेशम, जूट और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों पर भरोसा करते हैं, जो उन्हें स्थानीय रूप से प्राप्त होते हैं और उन्हें सदियों पुरानी तकनीकों का उपयोग करके संसाधित किया जाता है जिनका पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़ता है।
- ये फाइबर प्रदूषण और संसाधन की कमी में योगदान देने वाले सिंथेटिक विकल्पों के विपरीत, बायोडिग्रेडेबल, नवीकरणीय और जैव-विविधता में सहयोग देते हैं।
- पारंपरिक भारतीय बुनाई प्रथाएँ स्थानीय समुदायों में गहराई से व्याप्त हैं, जो सामाजिक एकजुटता और आर्थिक सशक्तीकरण की भावना को बढ़ावा देती हैं।
- देश भर में फैले बुनाई समूह अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ वैकल्पिक रोज़गार के अवसर दुर्लभ होते हैं, लाखों कारीगरों को आजीविका प्रदान करते हैं।
- भारतीय बुनाई का समर्थन करके, उपभोक्ता न केवल स्थायी फैशन में निवेश करते हैं, बल्कि पारंपरिक शिल्प के संरक्षण और कारीगर समुदायों के कल्याण में भी योगदान देते हैं।

भारतीय कपास निगम की भूमिका

- विश्व एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्थिरता को अपना रहा है, इसलिए भारतीय बुनाई का महत्त्व भी बढ़ा है और इस आंदोलन को आगे बढ़ाने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका भारतीय कपास निगम (CCI) की है जो कपास की खेती और बुनाई कार्यों की स्थिरता को बढ़ावा दे रहा है।
- सीसीआई की स्थापना 31 जुलाई, 1970 को वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में की गई थी।
- सीसीआई देश में कपास किसानों के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य संचालन करने के लिए एक केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
- यह पहल कपास किसानों के हितों के लिए कार्य करती है, विशेष रूप से बाज़ार में अस्थिरता के समय में, शोषण को रोकती है और उनके लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करती है।
- हालाँकि, स्थिरता के लिए सीसीआई की प्रतिबद्धता कपास किसानों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने से कहीं आगे तक है।
- इस प्रयास में सीसीआई एक अग्रणी शक्ति के रूप में उभरी है जो भारतीय बुनाई को बढ़ावा देने के ज़रिए स्थिरता को बढ़ावा देने के प्रयासों का नेतृत्व कर रही है।

भारतीय बुनाई क्षेत्र की चुनौतियाँ और अवसर

- भारतीय बुनाई के कई गुणों के बावजूद, स्थिरता की दिशा में इसकी यात्रा में चुनौतियाँ बनी रहती हैं। प्रमुख चुनौतियों में शामिल हैं-
- बड़े पैमाने पर उत्पादित मशीनीकृत वस्त्रों से प्रतिस्पर्द्धा
- बुनियादी ढाँचे की कमी

- युवा पीढ़ी के बीच घटती रुचि
- हालाँकि, ये चुनौतियाँ नवाचार और सहयोग के अवसर भी प्रस्तुत करती हैं। जैसे-
- प्रौद्योगिकी का उपयोग करना
- कौशल विकास में निवेश
- विभिन्न हितधारकों के साथ साझेदारी को बढ़ावा

भारतीय ब्रांड: कस्तूरी कॉटन भारत

- ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करके एंड-टू-एंड ट्रैसेबिलिटी के साथ ^कस्तूरी कॉटन भारत* ब्रांड की शुरुआत एक अभूतपूर्व पहल है।
- यह पहल कॉटन वस्त्र मूल्य शृंखला में पारदर्शिता के लिए एक नया मानक स्थापित कर रही है, ताकि भारतीय कपास के मूल्य निर्धारण में सुधार हो और पारंपरिक शिल्प कौशल को विलासिता (लग्जरी) से जोड़कर भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत को बढ़ावा दिया जा सके।

निष्कर्ष

- वर्तमान समय में जिस प्रकार दुनिया पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है, सीसीआई द्वारा किए गए प्रयास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। परंपरा को नवीनता और स्थिरता के साथ जोड़कर, सीसीआई न केवल भारतीय बुनाई की समृद्ध विरासत को संरक्षित करता है, बल्कि एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करता है।